ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(1): 125-126
www.allresearchjournal.com
Received: 11-11-2020
Accepted: 15-12-2020

दिलीप कुमार
शोधार्थी,यूजीसी नेट उत्तीर्ण, हिंदी विभाग, ल0ना0 मिथिला वि0वि0, दरभंगा, बिहार,भारत

Corresponding Author:
दिलीप कुमार
शोधार्थी, यूजीसी नेट उत्तीर्ण, हिंदी विभाग, ल0ना0 मिथिला वि0वि0, दरभंगा, बिहार,भारत

सकल राष्ट्रीय सुख की तलाश में पत्रकारिता (मीडिया) की उपयोगिता

दिलीप कुमार

सारांश
सकल राष्ट्रीय सुख भूटान द्वारा प्रतिपादित सकल घरेलू उत्पाद की तरह देश के विकास की नई अवधारणा है जिसे वहाँ की सरकार द्वारा संविधान में मान्यता देकर विकास के मापक की तरह प्रयुक्त किया जाता है। जी.डी.पी. में सिर्फ अर्थ (धन या आय या उपभोग) का मापन किया जाता है परंतु सकल राष्ट्रीय सुख या खुशी की विकास व्यवस्था में आर्थिक के अतिरिक्त सामाजिक, पारिवारिक, शारीरिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, पारिस्थितिक, मनोवैज्ञानिक आदि पक्षों की गणना कर व्यक्ति या राष्ट्र का सुख (खुशी) मापा जाता है। भूटान के इस कदम ने पूरी दुनिया में नई पहल की शुरुआत कर क्रांतिकारी कदम उठाया है। इसमें कुल नौ आयाम होते हैंः मनोवैज्ञानिक तंदुरूस्ती, स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कृति, समय–सदुपयोग, सुशासन, सामुदायिकता, पारिस्थितिकी तथा आय (जीवन–स्तर)। नौ आयामों में प्रत्येक को कई उपआयामों में (कुल तैंतीस) विभक्त कर 124 चरों में विभक्त कर कई प्रश्नावलियाँ तैयार की जाती हैं। फिर उसकी रेटिंग प्रदान की जाती है जो 0–10 तक होती है। यह विधि अलकायर फोस्टर प्रणाली पर संधारित होती हैं। संयुक्त राष्ट्र जीवन में सुख या खुशी के महत्व को देखते हुए 20 मार्च को 'विश्व सुख (खुशी) दिवस' घोषित कर प्रति वर्ष खुशहाली में देशों की रैंकिंग को घोषित करता है। पत्रकारिता (मीडिया) ने इस अवधारणा को सारे विश्व में संचारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। पत्रकारिता अपने प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों द्वारा सकल राष्ट्र सुख की अवधारणा का पूरे विश्व में जन–संचारित कर इस व्यवस्था को विश्व में क्रियान्वित करने की क्षमता रखती है। पत्रकारिता (मीडिया) सुख के तथ्यों को रोचक तरीके से अभिव्यक्त कर, जनसंचारित कर सारे विश्व में खुशहाली फैला कर अपनी उपयागिता साबित कर सकती है।

प्रस्तावना
सकल राष्ट्रीय सुख संपूर्ण विकास की नई अवधारणा है। सकल राष्ट्रीय सुख या सकल राष्ट्रीय खुशी भूटान की खोज तथा उसकी विकास व्यवस्था का नया मापक या सूचक है जो जी.डी.पी. को प्रतिस्थापित कर निर्मित किया गया है। भूटान ने विकास की अर्थव्यवस्था का सूचक सकल राष्ट्रीय सुख या खुशी को बनाकर सारा विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा है। मनुष्य के जीवन का उद्देश्य सुख प्राप्त करना है। सुख प्राप्त करने के लिए धन के अतिरिक्त सामाजिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय, पारिवारिक आदि पहलुओं का भी ध्यान रखना पड़ता है। सिर्फ धन कमाकर हम खुश नहीं हो सकते हैं। खुशी प्राप्त करने के लिए अन्य पहलुओं का भी उतना ही महत्व है जितना आर्थिक पहलू का। भूटान ने विकास की नई अवधारणा सकल राष्ट्रीय सुख या खुशी की स्थापना कर पूरे विश्व में हलचल मचा दी है। पूरे विश्व में इस पर शोध, सेमिनार, कार्यशाला, आंदोलन आदि हो रहे हैं तथा पत्रकारिता (मीडिया) ने इस नए पहलू को स्थान देकर, संचार कर अपने पारंपरिक तथा नये–नये रूपों द्वारा यथा प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक, दोनों माध्यमों द्वारा प्रचार कर इस विषय की महत्वपूर्ण बनाने में अपनी उपयोगिता निश्चित रूप से सिद्ध की है। मीडिया के कारण हीं यह सकल राष्ट्रीय सुख महत्वपूर्ण बन गया है।
सुख या खुशी इतना महत्वपूर्ण बन गया है कि संयुक्त राष्ट्र ने अपनी प्रस्ताव सं0– 65/309 (जुलाई 2011) तथा 66/281 (जुलाई 2012) द्वारा सकल राष्ट्रीय सुख तथा खुशी को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हुए 20 मार्च को 'अंतरराष्ट्रीय खुशी दिवस' घोषित कर दिया है। 2013 ई0 से प्रति वर्ष सारे विश्व में खुशी (सुख) दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा भी सुख या खुशी को

अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया हैं। पूरे विश्व में इस पर शोध, सम्मेलन, कार्यशाला, सेमिनार आदि निरंतर हो रहे हैं। ऐसा करना संयुक्त राष्ट्र का सुख या खुशी के प्रति संजीदगी को दर्शाना है। विश्व खुशी सूचकांक बनाया गया है। प्रतिवर्ष 20 मार्च को खुशहाली में सभी देशों के स्थान को दर्शाया जाता है। खुशहाली में सर्वोच्च तथा निम्नतम स्थानों वाले देशों की सूची दर्शायी जाती है। संयुक्त राष्ट्र खुशहाली हेतु छह मानकों यथाः प्रति व्यक्ति आय, सामाजिक सुरक्षा, स्वस्थ जीवन, सामाजिक सरोकार, व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा भ्रष्टाचार, उदारता या दान। इन सभी मानकों पर देश की स्थिति व्यापक रूप से मापी जाती है तथा तद्नुसार खुशहाली में देशों के स्थान तय किये जाते हैं। प्रायः खुशहाली में सर्वोच्च स्थानों पर फिनलैंड, डेनमार्क, स्विटजरलैंड, आइसलैंड, नीदरलैंड, स्वीडन, नॉर्वे आदि देश आते हैं। खुशहाली में निम्नतम स्थानों पर अफगानिस्तान, बुरूंडी, अफ्रीकी देश आदि आते हैं। भारत भी खुशहाली में प्रायः निम्नतम देशों की सूची (अंतिम दस देशों में) शामिल रहता है।

भूटान द्वारा 'सकल राष्ट्रीय सुख' की अवधारणा में नौ आयाम तय किये गये हैं। ये हैं मनोवैज्ञानिक तंदुरूस्ती या सुख भाव स्तर, स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कृति, समय–उपयोग, सुशासन, सामुदायिकता, पारिस्थितिक विविधता एवं लचीलापन तथा जीवन स्तर (आय)। इन नौ आयामों को पुनः उपआयामों में विभक्त किया गया है। फिर प्रक्रियाओं द्वारा सकल राष्ट्रीय सुख या खुशी की अवधारणा बनाई गई है। भूटान में इसके लिए सकल राष्ट्रीय सुख या खुशी आयोग बनाए गए हैं। सभी नीतियों को पहले सकल राष्ट्रीय सुख आयोग द्वारा परखा जाता है। सही होने पर ही नीतियों को लागू किया जाता है। भूटान के संविधान में 9, 9.1 तथा 9.2 अनुच्छेदों में इसके लिए प्रावधान तय किए गए हैं। सकल राष्ट्रीय सुख भूटान की विकास व्यवस्था का नया मापक है जो पारंपरिक सकल घरेलू उत्पाद की जगह प्रतिस्थापित कर बनाया गया है। सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) या सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जी. एन.पी) सिर्फ व्यक्ति या राष्ट्र के आर्थिक पक्ष को पहलू मानता है। पहले सकल राष्ट्रीय सुख या खुशी के चार ही आयाम थे किंतु वर्तमान में संशोधित करते हुए भूटान द्वारा सकल राष्ट्रीय सुख या खुशी के नौ आयाम बनाये गये हैं, जो इस प्रकार हैंः– (1) मनोवैज्ञानिक तंदुरूस्ती, (2) स्वास्थ्य, (3) शिक्षा, (4) संस्कृति, (5) समय–सदुपयोग, (6) राज्य का सुशासन, (7) सामुदायिक जीवन शक्ति, (8) पारिस्थितिक विविधता एवं लचीलापन तथा (9) प्रति व्यक्ति आय या जीवन स्तर। पुनः इन नौ आयामों को 33 उपयामों में विभक्त किया गया है। हर आयाम को कई उपआयामों में बाँट कर कुल तैंतीस उपआयामों में विभक्त किया गया है। 124 चर बनाये गये हैं। हर चर में विभिन्न प्रश्न पूछे जाते हैं। हर प्रश्न को चार विकल्पों में बाँटा गया है। हर विकल्प में प्रश्नों को अंको के आधार पर बाँटा गया है। सकल राष्ट्रीय सुख को अलकायर फोस्टर प्रणाली, 2007, 2011 पर आधारित किया गया है। 0–10 तक रेटिंग प्रदान कर सकल राष्ट्रीय सुख को निर्धारित किया जाता है। इस सकल राष्ट्रीय सुख में सुख के गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों पक्ष होते हैं। अतः देश के सर्वांगीण विकास का सही मापक सकल राष्ट्रीय सुख या खुशी ही हो सकती है। सिर्फ धन के आधार पर विकास को मापना समीचीन नहीं लगता है। धन के अतिरिक्त व्यक्ति के पारिवारिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय, भौतिक, शारीरिक आदि पक्ष भी सुख या सर्वांगीण विकास को मापते हैं। अतः विकास की नया सही मापक सकल राष्ट्रीय सुख (खुशी) ही हो सकता है। यह जी.डी.पी. से बेहतर मापक है।

विकास में सभी पक्षों का विकास शामिल होता है। इन बातों को दुनिया के कोने–कोने तक पहुँचाने, जनसंचारित करने में पत्रकारिता (मीडिया) की भूमिका अहम हो जाती है। पत्रकारिता देश की संवैधानिक व्यवस्था का चौथा स्तंभ माना गया है। पत्रकारिता (मीडिया) ने ही सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक अंधविश्वासों, पाखंडो, आडम्बरों तथा कई तरह के सामाजिक अपराधों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। भारत की स्वाधीनता में पत्रकारिता (मीडिया) ने काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। पत्रकारिता (मीडिया)देश की सभी समस्याओं का कुशल चिकित्सक है। पत्रकारिता (मीडिया) हर समय देश को नई राह दिखाई है। राष्ट्रगुरु की भूमिका पत्रकारिता (मीडिया) ने ही देश को प्रदान की है। अतः यह सकल राष्ट्रीय सुख को पूरे विश्व तथा भारत में क्रियान्वित करने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है तथा अपनी देश के विकास में नई व्यवस्था के संचालन हेतु नई रोशनी प्रदान कर अपनी उपयोगिता साबित कर सकती है।

सकल राष्ट्रीय सुख या खुशी वर्तमान में सबसे महत्वपूर्ण विषय बन गया है। हम जो भी काम करते हैं सुख के लिए ही करते हैं। यह सुख वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय हो सकता है। वैयक्तिक सुख यदि नैतिक प्रकार का है तो राष्ट्रीय सुख बन जाता है। व्यक्तियों के सुख से ही सकल राष्ट्रीय सुख का विकास होता है। 'सकल राष्ट्रीय सुख', 'सकल घरेलू उत्पाद' से ज्यादा महत्वपूर्ण है। इसी को ध्यान में रख कर भूटान ने अपनी विकास व्यवस्था का मापक सकल राष्ट्रीय सुख या खुशी को चुना है। सारे विश्व में इस खबर ने हलचल मचा दी है। अगर भूटान यह काम कर सकता है तो भारत या अन्य देश क्यों नहीं? पत्रकारिता (मीडिया) इस खबर की समीचीनता तथा सार्थकता को ज्यादा प्रभावी ढ़ंग से प्रचारित, प्रसारित, संचारित कर सारे विश्व में सकल राष्ट्रीय सुख की व्यवस्था को क्रियान्चित करने में प्रभावी तथा उपयोगी भूमिका अदा कर सकती है। पत्रकारिता (मीडिया) में वह शक्ति है जो पूरे विश्व में परिवर्तन की बयार बहाने में सक्षम है। पत्रकारिता (मीडिया) ने समाज तथा राष्ट्र को हरदम नई दिशा दी है। सुख या खुशी से संबंधित खबरों को प्रमुख स्थान देकर अपने विभिन्न रूपों प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों द्वारा जनता को सुख के प्रति सजग कर सकती है। पत्रकारिता (मीडिया) की पहुँच अब घर–घर तक हो गई है। मोबाईल पत्रकारिता द्वारा यह वर्तमान समय में हर व्यक्ति तक हर समय मौजूद रहती है। यह व्यक्ति के जीवन प्रबंधन को सही कर व्यक्ति को सुखी बना सकती है। देश की सरकारों को सुशासन के प्रति सदा सजग कर सकती है।

निष्कर्ष

इस प्रकार व्यक्ति तथा सरकार के कार्यों का उचित संचालन करने में पत्रकारिता (मीडिया) प्रभावी तथा उपयोगी भूमिका अदा करने में सक्षम है। आवश्यकता है अच्छे एवं प्रशिक्षित लोगों को पत्रकारिता (मीडिया) में आने की। तभी पत्रकारिता (मीडिया) देश की निःस्वार्थ सेवा कर सकती है जो पत्रकारिता (मीडिया) का मूल धर्म है। सकल राष्ट्रीय सुख की तलाश संबंधी तथ्यों को लोगों तक पहुँचाने में पत्रकारिता (मीडिया) सदा कारगर भूमिका में रहती है। यह व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, विश्व के सुख के प्रति सदा सर्वजन सुखाय की अग्रणी भूमिका अदा कर अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सकती है।

संदर्भ

1. ग्रॉस नेशनल हॉप्पीनेस/आर्थर सी. ब्रुक्स
2. पत्रकारिताः विविध विधाएँ/डॉ0 राजकुमारी रानी
3. आधुनिक पत्रकारिता/डॉ0 अर्जुन तिवारी
4. जीवन और सुख/शिवानंद
5. खुशहाल जीवन के मंत्र/डॉ0 विजय अग्रवाल
6. द आर्ट ऑफ हैप्पीनेस/दलाई लामा व होवार्ड सी.कटलर
7. हिन्दी पत्रकारिताः विकास और विविध आयाम/डॉ0 सुशीला जोशी
8. इंटरनेट, समाचार–पत्र, पत्रिकाएँ व अन्य